



“**ਭਯ**”

ਆਦਿ ਗੁਰਹ ਨਮਹ: ਜੁਗਾਦਿ ਗੁਰਹ ਨਮਹ: ਸਤਿਗੁਰਏ
ਨਮਹ: ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂਦੇਵਏ ਨਮਹ:

ਦਾਸ ਦੋਨੋਂ ਹਥ ਜੋੜ ਕੇ ਸਂਗਤ ਦੇ ਚਰਜਾਂ ਵਿਚ ਮਤਿਆ
ਟੇਕਦੇ ਹੋਧੇ ਆਪਣੇ ਗੁਨਾਹਾਂ ਦੀ ਮਾਫ਼ੀ ਲਈ ਅਰਦਾਸ ਬੈਨਤੀ ਕਰਦਾ
ਹੈ। ਓਗੁਨਾਹ ਜੋ ਕਰੋਡਾਂ ਜਵਾਬਾਂ ਤੋਂ ਇਕਟੂੰ ਕਰੀ ਬੈਠਾ ਹਾਂ। ਸਂਗਤ
ਦੀ ਸਮਰਥਾ ਹੈ ਬਕਖਣ ਦੀ, ਬਕਖਣ ਦੀ ਕ੃ਪਾਲਤਾ ਕਰੋ। ਸਂਗਤ ਦੇ
ਬਕਖੀ ਹੋਧੇ ਨੂੰ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਵੀ ਬਕਖ ਦੇਂਦੇ ਹਨ।

अज दे इस रुहानी सत्संग लई गुरु साहबा' ने जो
शब्द बक्षीश कीता है, ओ है “भय ।”

○ “जत पाहारा धीरज सुनिआरु । अहरणि मति वैद हथीआरु
। भउ खला अग्नि तप ताड । भांडा भाउ अमृतं तित ढाल ।
घड़ीऐ सबद सची टकसाल । जिन कउ नदरि करम तिन कारा
नानक नदरी नदरि निहाल ।” (1-8)

○ “बिन गुर कोई न रंगीऐ गुरु मिलिए रंग चडाउ । गुर कै
भै जो रते सिफती सच समाउ । भै बिन लागि न लगाई ना मन
निर्मल होइ । बिन भै करम कमावणे छूठे ठाउ न कोइ ।
जिसनो आपे रंगे सु रपसी सत्संगति मिलाइ । पूरे गुर ते सत
संगति ऊपजै सहजै सच सुभाइ ।” (3-427)

(पाठी माँ साहिबा)



गुरु नानक साहब ने आपणी इस वाणी दे विच
इस “भय” नूं स्पष्ट कीता है । ऐ भय की है ? इस जगत दे
विच ऐ जीवात्मा किसी ची चोले दे अन्दर विचरदी है, उसनूं
इस जगत दीया वस्तुआं, संबंध या प्राकृतिक रूप दे विच
किसी न किसी दा डर जरूर हर वक्त व्याप्त रहंदा है यानि कि
विपत्ति दी आशंका इस जीवात्मा नूं हर पल, हर घड़ी सताए

रखदी है और ऐ इसदे दुख दा कारण है । यानि कि इस जगत
दे विच जिनियां वी वस्तुआं अस्यी देखदे हाँ, ऐ नित नहीं है
यानि कि रहण वालियां नहीं हन । ऐ आपणे मूल तों हट रहियां
हन, हर पल, हर घड़ी विलय दी तरफ, कोई वी वस्तु लै लो,
कोई वी सबंध देख लो इस जगत दे विच सारियां नूं गुरु साहबां
ने झूठा या कूँड दी सज्जा दिती है । झूठ - कूँड दा भाव है, कि
इन्हाने खत्म हो जाणा है बदल जाणा है । कोई समां पिछला
देख लो, कोई वी वस्तु जो नजर आंदी सी इस वक्त ओदे
स्वरूप विच परिवर्तन है और अगे इसदे विच होर परिवर्तन हो
जायेगा । बहुत सारीयां वस्तुआं खत्म हो चुकियां हन, बहुत
सारी खत्म होंण दे कगार विच हन और बहुत सारीयां आण
वाले समय विच खत्म हो जाण गीयां । यानि कि ऐ सृष्टि जो
है, ऐ नित नहीं है, रहण वाली नहीं है, ऐ विलय दे विच है । हर
पल, हर घड़ी जदों वी कोई वी वस्तु इस संसार दे विच
दृष्टिगोचर होंदी है, ते ओ विनाश दी तरफ अग्रसर हो जांदी है
यानि कि जदों वी ऐ जीवात्मा “मैं” नूं भुलदी है, “यह” नूं प्राप्त
करदी है, तो “यह” दी जो ऐदी सज्जा है इसदे नाल जो प्यार
करदी है इसी दे नाल दुख उत्पन्न होंदा है । “मैं” की है ?
परमात्मा, परमात्मा निश्चित है, अटल है, रहण वाली वस्तु है,

प्रलय, महाप्रलय तों परे इसी ने रहणा है, इसी करके इसनूँ “मैं” दी संज्ञा दिती गई है । पर ऐ “मैं” कौंण है ? ऐ अंश है उस परमात्मा दा यानि कि आत्मा दी तरफ इशारा है । आत्मा ने रहणा है सदा लई । क्यों ? क्योंकि परमात्मा दा अंश है, परमात्मा ने वी रहणा है, इसने वी उसी दे विच जा के, उसी दा रूप हो जाणा है । पर ऐ आपणे “मैं” नूँ भुल जांदी है, “यह” समझदी है । “यह” दा की भाव है ? जिस तरीके नाल असी इस जगत दे विच किसी वस्तु दे नाल “यह” लगा देंदे हां, “यह” शरीर मेरा है, “यह” अंग मेरे ने, “यह” संबंधी मेरे ने माँ मेरी है, बाप मेरा है, भैंण - भरा मेरे ने, ऐ वस्तुआं मेरियां ने । जित्थे वी ऐ “यह” लगदा जांदा है और ऐ सृष्टि दे विच आई होई आत्मा, जो कि “मैं” अटल निश्चित है, ऐ निर्भय है, इसने कदे वी विलय विच नहीं जाणा, आपणे आप नूँ भुल जांदी है और “यह” समझदी है और ज्यों - ज्यों ऐ “यह” दे नाल असक्त होंदी है, ऐ आसक्ति जो है दुख दा कारण है, इसदा दुख उत्पन्न होंदा जांदा है । क्यों ? ऐ आसक्त करदी है ऐसियां वस्तुआं नाल जिन्हाने नित नहीं रहणा । “यह” नहीं रहणी, “यह” हर वस्तु जेडी द्वेत भाव लै करके आंदी है । दूसरा भाव की है, जिसने खत्म हो जाणा है यानि कि “मैं” ने रहणा है । जदों ऐ

“मैं” आपणे मूल नूं परमात्मा नूं भुल जांदी है, “मैं” नूं भुल जांदी है, “यह” नूं याद रखदी है, हर वक्त “यह” दा चिंतन करदी है । जप किसदा कर रही है ? “यह” दा, वस्तुआं दा, शरीर दा ऐ सारियां चीजां नाशवान ने और जिस वेले ऐ “यह” दा जप करदी है इसनूं दुख पैदा होंदा है, दुख मिलदा है और अगर ऐ इसनूं भुल जावे, आपणे “मैं” नूं याद करे हर पल, हर घड़ी “मैं” दा जप करे, ते उसी वक्त इसनूं परमात्मा दी प्राप्ति हो जांदी है । गीता दे विच, भगवान श्री कृष्ण जी ने आपणे इस गूँडे ज्ञान नूं बड़े अच्छे तरीके दे नाल स्पष्ट कीता है, कुंती पुत्र नूं उपदेश देंदे होये, कि अगर तूं “मैं” नूं याद रखें, आपणी मन, बुद्धि और इन्द्रियां नूं मेरे विच समाविष्ट करके आपणे मन नूं स्थिर कर लवें, ते तैनूं “मैं” दी प्राप्ति हो जायेगी । “मैं” की हाँ ? इस जगत दे विच जड़ या चेतन जिस वी जगह तूं नजर मार, “मैं” नूं देख, “मैं” ही हर जगह रमया होया हाँ । ओ आपणी बुद्धि और इस मन दे जरिये तूं इस “मैं” नूं प्राप्त नहीं कर सकदा, इस करके ऐ निश्चित नहीं ने, रहण वालियां चीजां नहीं ने । ऐ बुद्धि जो है हर वक्त बदल रही है, मन दे विच तरंगा उठ रहियां ने, हर वक्त ओ किसी न किसी वस्तु दे अधीन हो करके इस संसार दे विच, जगत दे विच भोग करदा

है और आपणे मन नूं चलायेमान करदा है और ऐ जो “यह”
दा भाव है, इस मन और बुद्धि दी सीमा दे अन्दर है और जद
तकण तूं मन और बुद्धि दी सीमा दे अन्दर रह करके परमात्मा
नूं प्राप्त करन दी कोशिश करेंगा, तूं उसनूं जाण वी नहीं सकदा
। इस करके तूं इन्हानूं मेरे अन्दर समाहित कर, मेरे अन्दर
स्थिर कर जदों ऐ मेरे अन्दर स्थिर हो जायेगा, उस वक्त तैनूं
हर जगह अन्दर और बाहर “मैं” ही विचरदा नजर आवांगा और
जिस वेले तूं इन्द्रियां दी दासता तों मुक्त हो जायेंगा, उस वक्त
तूं मेरे “मैं” नूं यानि कि निज स्वरूप नूं प्राप्त करेंगा और मेरा
निज स्वरूप जेडा है ऐ अंतर दे विच प्राप्त होंदा है । जगत दे
विच असी उसनूं बाहर इन्द्रियां दे रूप विच प्राप्त नहीं कर
सकदे । इन्द्रियां दीया आपणी सीमा ने, ऐ चौदह वस्तुआं ने ।
जद तकण तूं ऐ चौदह वस्तुआं नूं सीमित नहीं करेंगा, पंज
ज्ञानेन्द्रियां ने, पंज जो है इन्द्रियां ने । जद जकण ऐ 10 स्थिर
नहीं होंण गीया, उस तों उत्ते मन है, फिर बुद्धि है, फिर चित्त
है, फिर अहंकार है । उसदे नाल ऐ चार वस्तुआं दा वी सीमित
होंणा यानि स्थिर होंणा जरूरी है । जदों ऐ चौदह वस्तुआं स्थिर
हो जाण गीया, उस वक्त तूं मेरे निज स्वरूप नूं प्राप्त करेंगा ।
यानि कि भाव की है, उपदेश की है ? अगर असी परमात्मा नूं

प्राप्त करना चाहंदे हाँ, ते जित्थे ऐ चौदह वस्तुआं नूँ स्थिर
करना जरूरी है, ओत्थे “मैं” नूँ उजागर करना बहुत जरूरी है।
“मैं” दा भाव अहंकार नहीं है, ऐत्थे “मैं” दा भाव आत्मा यानि
कि परमात्मा दा अंश उस परमात्मा नूँ याद करना है और जो
“यह” है, “यह” ने नाश हो जाणा है। जो वी वस्तु सानूँ मिलदी
है उसदा वियोग जरूर है। वियोग होंण करके ही ऐ जीवात्मा
जो है दुख नूँ प्राप्त करदी है। याद रखणा, कोई वी वस्तु जो
मिलदी है, ओ सदा लई नहीं है, ओने निश्चित या अटल नहीं
रहणा निश्चित या अटल रहण वाली वस्तु सिर्फ इक है ओ है
परमात्मा। असी परमात्मा नूँ प्राप्त करन लई कदे उद्यम नहीं
करदे, कोई प्रतिक्रिया इस्तेमाल नहीं करदे, कदे उसदा जप
नहीं करदे, कदे उसदे ख्याल नूँ आपणे विच समाविष्ट नहीं
करदे, इसी करके असी दुखी हाँ। जदों कोई वस्तु मिलेगी,
उसदा वियोग जरूर होयेगा। मिलन दा ते कोई निश्चित उपाय
नहीं है, कि ऐ कोई वस्तु सानूँ मिलेगी ही या कोई संबंध साडा
होयेगा ही पर वियोग निश्चित है, अगर कोई वस्तु सानूँ मिल
गई है ते ओदा वियोग जरूर होयेगा, अवश्य होयेगा। अगर
असी ऐ भाव नूँ जाण लईये, कि मिली होई वस्तु दा वियोग
निश्चित है, ते असी दुख तों उभर जावागे। ऐ जितने वी दुख

ने, ऐ संसार दे नाल वियोग करके ने, क्योंकि ऐ जीवात्मा जो है इसदा संग करदी है, इसदा संग करके ही ओ दुखी होंदी है। क्यों ? ऐ सारीयां वस्तुओं ने नाश हो जाणा है, नाशवान वस्तुओं ने, नाशवान वस्तुओं दे नाल आसक्ति किस कम दी ? इसी करके गुरु साहब उपदेश करदे ने, कि असी इस ऐसी आसक्ति तो उभरना है, उस परमात्मा दी आसक्ति करनी है, परमात्मा दी प्रीत करनी है। इको प्रीत सच्ची है जिसनूं प्राप्त करके जिसदे नाल प्रीत करके असी उस सच नूं प्राप्त कर सकदे हाँ। तां गुरु साहबां ने ऐत्थे जो “भय” शब्द दा इस्तेमाल कीता है, “भय” दा की भाव है ? जित्थे इस संसार दे नाल आसक्त हो करके जित्थे कि उसने खत्म हो जाणा है, नाशवान है। इस जीवात्मा नूं सदा मन दा संग करके उसदा डर रहंदा है, कि कोई वस्तु मेरे तों बिछड़ न जाये ! कोई संबंध मेरे तों दूर न हो जाये ! मैनूं धाटा न पै जाये ! कोई नुकसान न हो जाये या कोई वी वस्तु इस जड़ या चेतन रूप दे विच, इस जगत दे विच जदों इस जीवात्मा नूं मिलदी है, ते मन दा संग करके ओ इस तरीके दा विचार करदी है, कि ऐ मेरे तों दूर न हो जाये ! घट न जाये या मैं अभाव दे विच न आ जावा ! ऐसी जदों विचारधारा अन्दर दे विच गहरी हो जांदी है उस वेले ऐ

ਵਿਪਤਿ ਦੀ ਆਸਕਾ ਉਥਦੇ ਅਨਦਰ ਉਤਪਨਨ ਹੋਂਦੀ ਹੈ ਔਰ ਇਸ ਤਰੀਕੇ
ਦੀਂਧਾਂ ਸੂਖਮ ਕਿਰਨਾਂ ਜਦੋਂ ਉਤਪਨਨ ਹੋਂਦਿਆਂ ਜੇ, ਏ ਭਯ ਨੂੰ ਤਜਾਗਰ
ਕਰਦਿਆਂ ਜੇ । ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਆਸਤਿ ਜੋ ਹੈ ਭਯ ਦਾ ਮੂਲ ਕਾਰਣ ਹੈ,
ਅਗਰ ਅਸੀਂ ਇਸ ਭਯ ਤੋਂ ਦੂਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ, ਤੇ ਸਾਨੂੰ ਸੰਸਾਰ ਦੀ
ਆਸਤਿ ਤੋਂ ਦੂਰ ਹੋਣਾ ਪਥਿਗਾ, ਉਥ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਆਸਤਿ ਕਰਨੀ
ਪਥਿਗੀ, ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤਿ ਕਰਨੀ ਪਥਿਗੀ । ਹੁਣ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ
ਪ੍ਰਾਪਤਿ ਕਿਸ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ, ਏਨੂੰ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਸ਼਷ਟ
ਕਰਦੇ ਜੇ । ਜਿਤੇ ਅਸੀਂ ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਜੜ ਔਰ ਚੇਤਨ ਵਸਤੁਆਂ ਦੇ
ਨਾਲ ਪਾਰ ਦੇ ਨਾਲ ਆਸਤਕ ਹੋਂਦੇ ਹਾਂ । ਆਸਤਿ ਕੀ ਹੈ ? ਪ੍ਰੇਮ ਦਾ
ਭਾਵ ਹੈ ਯਾਨਿ ਕਿ ਪ੍ਰੇਮ ਤੋਂ ਭਰ ਦੀ ਉਤਪਤਿ ਹੈ । ਇਸ ਸੰਸਾਰ ਦੇ ਨਾਲ
ਪ੍ਰੇਮ ਕਰਕੇ, ਇਸ ਪ੍ਰੇਮ ਦੀ ਵਸਤੁਆਂ ਤੋਂ ਸਾਨੂੰ ਭਰ ਦੀ ਆਸਕਾ ਉਤਪਨਨ
ਹੋਈ । ਉਥੇ ਤਰੀਕੇ ਦੇ ਨਾਲ ਅਸੀਂ ਉਥ ਪਰਮਾਤਮਾ, ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ,
ਸਤਪੁਰਖ ਦੇ ਨਾਲ ਪ੍ਰੇਮ ਕਰਿਧੇ, ਤੇ ਪ੍ਰੇਮ ਦੇ ਵਿਚਾਂ ਭਰ ਦੀ ਆਸਤਿ
ਪੈਦਾ ਹੋਂਦੀ ਹੈ । ਹੁਣ ਭਰ ਕੀ ਹੈ ? ਇਕ ਪੜੀ ਇਕ ਪਤਿ ਦਾ ਪਾਰ
ਕਿਸ ਤਰੀਕੇ ਦੇ ਨਾਲ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਸਕਦੀ ਹੈ ? ਭਰ ਦੇ ਨਾਲ । ਭਰ
ਧਾਨੀ ਫ਼ਹਸ਼ਤ ਨਹੀਂ ਹੈ ! ਫ਼ਹਸ਼ਤ ਦਾ ਭਾਵ ਅਲਗ ਹੈ, ਅਗਰ ਫ਼ਹਸ਼ਤ
ਹੋਧੇਗੀ ਪ੍ਰੇਮ ਦੇ ਵਿਚ, ਤੇ ਓ ਪ੍ਰੇਮ ਨਹੀਂ ਕਹਲਾਵੇਗਾ, ਓਦੇ ਵਿਚ
ਘੁਣਾ ਉਤਪਨਨ ਹੋ ਜਾਵੇਗੀ ਓ ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਘੁਣਾ ਹੋਧੇਗੀ, ਤੇ ਦੋਨੋਂ
ਪ੍ਰਾਣਿਆਂ ਦਾ ਵਿਚਛੇਦ ਹੋ ਜਾਵੇਗਾ ਧਾਨੀ ਇਕ - ਦੂਸਰੇ ਤੋਂ ਅਲਗ ਹੋ

जाणगे । भय और जो दहशत है, ऐ दोनों अलग अर्थ लै करके आंदे ने । भय दा की भाव है, अगर इक पन्नी आपणे पति नूँ प्यार करदी है, ते उसदे नाल उसदे अंतर दे विच इक क्रिया हमेशा चलदी रहंदी है कि आपणे पति किसी न किसी, ऐसे कम न कर बैठा कि ओ नाराज हो जाये यानि कि उसदी नाराजगी तो उसनूँ डर पैदा होंदा है, उसदी नाराजगी न मैंनूँ प्राप्त होये, जो आनन्द और सुख दी प्राप्ति मैंनूँ आपणे पति तों होई है, इस तों मैं विशुड्ह न जावा । यानि कि ऐसा विश्वेषा जो सदा आनन्दमयी है, इस तों दूर होण दा जो भाव है, अन्दर दे विच डर पैदा करदा है । यानि कि डर दे विच इक श्रद्धा है और श्रद्धा दे नाल प्रेम दी उत्पत्ति है । प्रेम और डर, ऐ दोनों चोली दामन दा साथ लै करके जगत दे विच इस आत्मा दे नाल मिलदे ने । जदों ऐ जीवात्मा आपणा पति यानि कि परमात्मा दे नाल प्यार करदी है और ऐसा कोई वी कम करन तों डरदी है कि आपणे पति परमेश्वर तों रुष्ट न हो जावा यानि कि उस तों दूर न हो जावा, ऐ इक ऐसा भयानक डर है, ऐ अंतर दे विच जदों जिस किसी भाग्यशाली जीवात्मा दे अंतर दे विच उत्पन्न हो जांदा है, ते ओ कदे वी कोई गल्त कम करन दे नजदीक नहीं जांदी । असी कितने वी ऐ मन नूँ समझा

ਲਈਧੇ, ਵਿਸੇ - ਵਿਕਾਰਾਂ ਤੋਂ ਫੁਰਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰ ਲਈਧੇ, ਏ ਬਾਜ ਨਹੀਂ ਆਂਦਾ, ਜ ਏ ਨਿਸ਼ਲ ਹੋਂਦਾ ਹੈ, ਜ ਏ ਵਿਸੇ ਵਿਕਾਰਾਂ ਦੇ ਸ਼ਵਾਦ ਲਗਾਣ ਤੋਂ ਫੁਟਦਾ ਹੈ । ਤੇ ਉਸਦਾ ਕੀ ਉਪਾਯ ਹੈ ? ਸਤਿਗੁਰੂ ਉਪਦੇਸ਼ ਕਰਦੇ ਨੇ, ਇਕੋ ਹੀ ਉਪਾਯ ਹੈ “ਭਯ” । ਜਦ ਤਕਣ ਤੋਂ ਅਨੰਦਰ ਉਸ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਪ੍ਰੀਤ ਨਹੀਂ ਹੋਯੇਗੀ, ਉਥਦੇ ਵਿਚੋਂ ਪ੍ਰੀਤ ਦੇ ਅਨੰਦਰੋਂ ਭਰ ਨਹੀਂ ਉਤਪਨਨ ਹੋਯੇਗਾ ਉਥਦੇ ਮਿਲਣ ਦਾ ਧਾਨੀ ਕਿ ਮੈਂ ਉਸ ਤੋਂ ਬਿਛੁੰਡ ਨ ਜਾਵਾਂ । ਅਗਰ ਮੇਰੀ ਅਖ ਬੰਦ ਹੋ ਗਈ ਉਸ ਤੋਂ ਮਿਲਣ ਤੋਂ ਪਹਲਾਂ ਹੀ, ਤੇ ਮੇਰਾ ਕੀ ਹਸ਼ਾਰ ਹੋਯੇਗਾ, ਇਸ ਜੀਵਾਤਮਾ ਦਾ ਕੀ ਹਾਲ ਹੋਯੇਗਾ ! ਮਰਨ ਦੇ ਬਾਦ ਦਾ ਭੇਦ ਜੇੜਾ ਹੈ ਸਤਾਂ ਦੇ ਕੋਲ ਹੈ, ਸਤਾਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਬਾਣੀ ਦੇ ਵਿਚ ਸਾਰਾ ਸ਼ਪਣ ਕਿਤਾ ਹੈ ਕਿ ਕਿਸ ਤਰੀਕੇ ਦੇ ਨਾਲ ਏ ਕਾਲ ਦੇ ਮੁੱਹ ਦੇ ਵਿਚ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਔਰ ਕਾਲ ਕਿਸ ਤਰੀਕੇ ਦੇ ਨਾਲ ਲਗਾਯੇ ਗਏ ਏ ਭੋਗ ਜੋ ਇਸਨੂੰ ਫਿਤੇ ਨੇ, ਸ਼ਵਾਦਾਂ ਦਾ ਹਿਸਾਬ ਲੈਂਦਾ ਹੈ ਔਰ ਬਾਰ - ਬਾਰ ਜਨਮਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਜਨਮ - ਮਰਣ ਦੇ ਗੇੜ ਦੇ ਵਿਚ, 84 ਲਖ ਜਾਮੇਯਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਇਸਨੂੰ ਕੈਦ ਕਰਕੇ ਰਖਦਾ ਹੈ । 84 ਲਖ ਜਾਮੇ, ਇਕ ਜਾਮੇ ਦੀ ਤਮ ਅਗਰ 2 ਸਾਲ ਲਗਾਈ ਜਾਯੇ, ਤੇ 84 ਲਖ ਜਾਮੇਯਾਂ ਦਾ ਕਿਤਨੇ ਕਰੋੜ ਜਨਮ ਮਿਲਦੇ ਨੇ ਔਰ ਏ ਜਨਮ - ਮਰਣ ਦਾ ਦੁਖ ਜੋ ਹੈ ਇਸ ਜੀਵਾਤਮਾ ਨੂੰ ਸ਼ਹਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ । ਪਰ ਇਸ ਦੁਖ ਤੋਂ ਨਿਕਲ ਕਰਕੇ ਜਦੋਂ ਇਸਨੂੰ ਫਿਰ ਇਕ ਮੌਕਾ ਮਿਲਦਾ ਹੈ, ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਹਮਤ ਕਰਦੇ ਨੇ, ਪਰਮਾਤਮਾ ਪ੍ਰਸ਼ਨ

होंदा है । असी बार - बार ऐ फरियाद करदे हाँ कि सतिगुरु
दी रहमत होवे ! परमात्मा प्रसन्न होंवण ! ओ कदों प्रसन्न
होंवणगे ? साध - संगत जी, ओ ते प्रसन्न हो चुके ने, अगर ओ
प्रसन्न नहीं होंदे ते सानूं मनुखा जन्म क्यों मिलदा ! यानि कि
अगर सतिगुरु प्रसन्न होंणगे, परमात्मा प्रसन्न होयेगा, ते ओ की
करेगा ? सानूं मनुखा जन्म दे देगा । हुण मनुखे जन्म विच
आ करके वी जीवात्मा केड़ियाँ तुकाँ लै करके बैठी है, “सो
सिमरे जिस आप सिमराये” यानि कि ओ आप ही सिमरन
करवायेगा ! साध - संगत जी, ऐ स्टूडेंट दा कम है पाठ पढ़ना,
याद करना, होमवर्क करना और आपणे अंतर दे विच विशे
विकारा दी अग नूं शांत करना, मन दी इन्द्रियाँ दी दासता तों
मुक्त कराणा, यानि कि अंतर दी सफाई करनी ऐ मनुखे जन्म
विच आ करके ऐ जीवात्मा दा आपणा कम है, ऐ स्टूडेंट दा
कम है । मनुखे जन्म विच आ करके वी असी ऐसियाँ तुकाँ दे
अधूरे अर्थ कड़ करके, असी ऐ निश्चल हो करके बैठ जादे हाँ
। सतिगुरु दे कोल जादे हाँ, अमृत छकदे हाँ, नाम लैंदे हाँ,
उस तों बाद फिर ऐ तुक लै करके बैठ जादे हाँ “जो आप
सिमराये” साध - संगत जी, किस तरीके दे नाल समझाया जा
सकदा है ! बार - बार सदियाँ तों ही गुरु साहब उपदेश करदे

आ रहे ने, कि ऐ मनुखा जन्म इतना सस्ता और आसान नहीं है कि हर राह चलदे किसे नूँ मिल जांदा है ! 84 लख गेड़ तों बाद इक जन्म मिलदा है, इक मौका मिलदा है परमात्मा नूँ मिलण दा । ऐ स्वासा दी पूंजी नाल दिती जांदी है खर्च करन वास्ते यानि कि चंगयाईया (अच्छाईया) खरीदनिया ने, बुराईया जेड़िया ऐ त्यागणिया ने । बाणी दे विच बार - बार ऐ उपदेश दिता गया है कि असी इकट्ठा की कर रहे हाँ ? पापा दी गठरी बंध रहे हाँ, ऐ पापा दी गठरी लै करके जावागे । जेड़े मनमुख है ने, ओ पापा दी गठरी लै करके जाणगे, जेड़े मनमुख तों गुरुमुख बण गये यानि कि सतिगुरु दे उपदेशानुसार आपणी हस्ती मिटा दिती, आपणे अंतर दी मैल धो लई, उन्हाने जो है पुन कमा लेया, पुन दी खट लै लैंणगे । ऐदा भाव की है, कि जेड़ी जीवात्मा ने सतिगुरु दे अर्थीन आ करके ऐ कर्माई कर लई है, ऐ कर्माई दा विशय है, मनुखे जन्म विच आ करके अगर किसी ने कर्माई नहीं कीती, ते ओ अधूरा आया, अधूरा ही चला गया । बहुत सारी सृष्टि दे विच असी नजर मार करके देखिये, धर्म दे धर्म, देश दे देश, कौमा दीया कौमा, उस नाम तों, उस शब्द तों, उस कीर्तन तों, उस अकथ कथा तों खाली बैठे ने । बाहरी नाम नूँ असी जपदे हाँ, उसी नूँ जप - जप

करके असी मर गये, खप गये । असी सतिगुरु दे कोल जा
करके नाम लैदे हां, ओ वी जपण दा उपदेश देंदे ने, पर ऐ इक
पौढ़ी है, इक निश्चित सीमा है, इक ऊँचाई है निश्चित सीमा
तक, उस तों उत्ते लै करके ऐ नहीं जा सकदी । तां इसदा ऐ
भाव नहीं है, कि जप - जप के मर गये, असी वी जप - जप
के मर जावागे, साड़ी सम्भाल नहीं होयेगी ! यानि कि विचार
करन वाली गल है कि सम्भाल किसदी होयेगी, सम्भाल उसी
दी होयेगी जिसने इस चिन्ह नूं मुख रख करके आपणे अंतर
दी सफाई कीती । जिसने आपणे अन्तर दी सफाई नहीं कीती,
ओ जप - जप के ही खप गया । ओ कितने ही सदियां ही हो
गईयां, असी कोई पहली वारी नहीं जपण लगे ! या पहली वारी
नहीं गुरु दे लङ लगे ! कई वारी गुरु दे नजदीक आये हां, कई
वारी गुरुआं ने रहमत करके ऐ मौका दिता है, ऐ मनुखा जन्म
दिता है, ऐ स्वासां दी पूँजी दिती है, बार - बार जमीन -
जायदाद कई तरह दे सुख दिते ने । ऐ किस वास्ते दिते ने ?
ऐ आपणा कम करन वास्ते दिते ने और अगर असी इस जन्म
दे विच आ करके आपणे घर दा कम नहीं कीता, आपणे मूल
दा समाण दा कम नहीं कीता, घर दा कम की है ? कि इस
संसार दे विच्चों निकलना है, इसदी आसक्ति तों निकलना है,

उस परमात्मा दे नाल जुड़ना है, परमात्मा आसक्ति दे नाल प्रीत पैदा करनी है और ऐ प्रीत दे विच्छों डर उत्पन्न होंदा है और डर साडे अन्दर पैदा न होया, ते असी प्रीत वी नहीं कर सकदे और अगर असी प्रीत वी नहीं कीती, ते मरन दे बाद जीव दी सम्भाल किस तरीके नाल होयेगी ? जिस वक्त इसदे ऊपर बुद्धि छोड़ी जायेगी, उसी वक्त ख्याल पक्के हो जाणगे, ओ आसक्ति सामणे आ जायेगी, जिस आसक्ति नूंलै करके जीवात्मा ने इस जगत विच भ्रमण कीता है और ओ आसक्ति जो है इस जीवात्मा नूं हालाकि फैसला ते जन्म तों पहले हो चुका होंदा है, कि जिस तरीके दी आसक्ति है, उसी तरीके दे चोले दा निर्माण हो चुका होंदा है, पर इक आखिरी मौका जेड़ा है, ओ ऐ जीवात्मा नूं आखिर दे विच जरूर दिता जांदा है, कि अगर ओ परमात्मा दे नाल मिल जाये । परमात्मा की है ? अकाल पुरुष जो है इक ताकत दे रूप दे विच सतिगुरु दे अन्दर जो कि ताकत लै करके आंदे ने, उसदे अन्दर कम करदे ने । इस वास्ते असी कहंदे हाँ, परमात्मा जर्र - जर्र दे विच है, हर कण दे विच मौजूद है, ते फिर उस तों बाद ऐ भाव जेड़ा है, की अर्थ लै करके आंदा है, कि जदों असी नाम लैंदे हाँ या अमृत छकदे हाँ, उस वेले सतिगुरु साडे अन्दर आ करके बैठ जादे ने । ऐ

कितना अधूरा अर्थ है, इक पासे असी कहंदे हां, पारब्रह्म ईश्वर सतिगुरु, दूसरे पासे ऐसा अर्थ लै करके आंदे हां, कि जद तकण जीवात्मा सतिगुरु दे नजटीक नहीं जायेगी, तद तकण सतिगुरु उसदे अन्दर प्रवेश नहीं करनगे ! “घट-घट के अंतर की जानत” कि घट - घट दे अन्दर दी जाणदा है । अगर ओ घट - घट दे विच व्याप्त है ताहीं ते उसदे अन्दर दी जाणदा है । अगर उसदे अन्दर व्याप्त न होवे, ते उसदे अन्दर दी खबर उसनूं किस तरीके नाल मिल सकदी है ? और ऐ जेड़ा साड़ा अर्थ निकालेया होया है कि जदों असी सतिगुरु दे कोल जादे हां, ओ सानूं नाम देंदे ने, ते साडे अन्दर आ करके विराजमान होंदे ने, ओ बहुत ही अधूरा अर्थ है । ओ परमात्मा, ओ अकाल पुरुख किस रूप दे विच इस जगत दे विच घट - घट दे विच व्याप्त है । ओ सतिगुरु दे जरिये इक ताकत यानि अदृश्य किरनां दे जरिये इस जगत दे हर जड़ और चेतन दे विच विद्यमान है । अगर कोई जीवात्मा मनुखे जन्म विच आ करके जड़ वस्तुआं दी अराधना कर रही है, पिछले जन्मा अनुसार जो वृति बणी है उसनूं सोझी नहीं है, पर अंतर दे विच उसने ऐ फैसला कर लेया है कि किसे वी तरीके दे नाल मैं उस परमात्मा नूं प्राप्त करना चाहंदी हां और उसनूं प्राप्त करन वास्ते ओ

आपणे अन्तर दी सफाई कर रही है हर पल, हर घड़ी आपणे सतिगुरु दे उपदेशानुसार । जो वी इस जगत दे विच जितने वी अवतारा ने, चाहे किनां वी रूपां दे विच आये ने, चाहे ओ अधूरी ईश्वरीय शक्तियां सन, पर उन्हाने कटी वी झूठ बोलण दी गल नहीं कही ! कटी वी किसी दा हक मारन दी गल नहीं कही ! कटी वी किसे दी ईर्ष्या निन्दया दी गल नहीं कही ! अगर उन्हां उपदेशां दे ऊपर अमली जामा पहना रही है, अन्दर दी सफाई कर रही है, ते उस तों बाद ओ जीवात्मा अन्तर दे विच जदों आखिरी समय सहज - स्वाभाव अन्दर जांदी है, उस वेले जिस वेले उसनूं ऐ ख्याल दिते जादे ने, ओ ख्याल समेट करके आपणे परमात्मा नूं याद करदी है । ओ परमात्मा नूं किसे वी रूप दे विच याद कर रही है, सतिगुरु कदे वी उसनूं नहीं छडणगे ! यानि कि अकाल पुरुख जो सतिगुरु दे रूप दे विच जीवात्मा दे अन्दर दे विच मौजूद है । पहले सानूं अधूरा अर्थ नहीं लैंणा चाहिदा है कि ओ सानूं भुलया बैठया है ! सानूं ते आपणे सतिगुरु दा इक बच्चे जितना वी डर नहीं है ! अगर इक बच्चे जितने डर दा की भाव है ? इक दुकान ते इक छोटा जिनां बच्चा बैठा होवे, ते असी उस दुकान तों कोई वी वस्तु चुरान दी कोशिश नहीं करदे यानि कि सानूं उस बच्चे दा डर

है । इक पासे असी ऐ कहंदे हां, कि सतिगुरु घट - घट दे विच है, ते ओ साडे अन्दर नहीं है ? अगर ओ साडे अन्दर है, अगर ऐ सानूं यकीन हो जावे, ते फिर परमात्मा क्या दूर है ? फिर असी भैड़े कम किस तरीके नाल कर लवागे ? अज अगर असी ऐत्थे बैठे हां, सिर्फ इस करके बैठे हां कि सानूं परमात्मा दा यकीन नहीं ! परमात्मा केड़ी जगह है, किस तरीके दे नाल मिलदा है, अगर असी ऐ यकीन कर लईये, उसदा भय साडे अन्दर उत्पन्न हो जाये, ओ भय जेडा है सानूं कदे वी भैड़ा कम करन नहीं देगा, किसी वी रूप दे विच, चाहे ओ सूक्ष्म रूप दे विच या मानसिक रूप दे विच है अंतर दे विच कोई भैड़ा ख्याल नहीं लिया सकदे । यानि कि मन जो है इन्द्रियां दी दासता तों मुक्त होंणा शुरू हो जायेगा और ज्यों - ज्यों ऐ इन्द्रियां दी दासता तों मुक्त होयेगा, ऐ निश्चल होंण लग जायेगा । ऐदा ख्याल जो है आपणे सतिगुरु यानि अकाल पुरुख विच पक्का होंण लग जायेगा और ज्यों - ज्यों इसदा ख्याल सतिगुरु विच पक्का होयेगा, त्यों - त्यों इसदी प्रीत पक्की होयेगी और ज्यों - ज्यों प्रीत वददी जायेगी, त्यों - त्यों सतिगुरु नूरानी रूप दे विच प्रगट होंदे जाणगे और ज्यों - ज्यों नूरानी रूप स्पष्ट होंदा जायेगा, ते उसदे विच जीवात्मा प्रीत पक्की

करदी जायेगी और ऐ डर जो है, हर पल, हर घड़ी उसदे नाल
रहेगा । ऐ ही डर उसनूं रहेगा अन्दर जो स्वरूप प्रगट होया है,
मैं उस तों विछुड़ न जावां । ऐ इक ऐसा भयानक डर है साध
- संगत जी, ऐ डर जो है जीवात्मा नूं सारे विकारां तों कड़ के
लै जांदा है । यानि कि इको उपदेश, मन तों असी बचणा
चाहंदे हां, इसदे जहर तों बचणा चाहंदे हां, इन्द्रियां दी दासता
तों इसनूं मुक्त कराणा चाहंदे हां, ते आपणे अन्दर उस परमात्मा
दा, उस सतिगुरू दा भय उत्पन्न करो ! जद तकण ऐ भय उत्पन्न
नहीं होयेगा, तद तकण असी ऐना विकारां तों निकल नहीं
सकदे और जद तकण ऐ विकारां तों नहीं निकलाए, तद तकण
ऐ मन निश्चल नहीं हो सकदा और जद तकण मन निश्चल नहीं
होयेगा, मन बुद्धि दी सीमा तों ऐ जीवात्मा निकलेगी नहीं, यानि
कि जड़ और चेतन दी गड़ नहीं खुलेगी, तद तकण ऐ जीवात्मा
अंतर दे विच सिमट करके उस नूरानी रूप दा दीदार नहीं कर
सकदी और जद तकण नूरानी रूप प्रगट नहीं होयेगा, ऐ
जीवात्मा किस तरीके दे नाल अंतर दे विच चढ़ाई करेगी ?
अन्दर इसदी सम्भाल कौंण करेगा ? कौंण, कैसी ताकत है ?
असी जड़ वस्तुआं दी अराधना करदे हां, ऐ जड़ वस्तुआं अंतर
दे विच किस तरीके दे नाल इस जीवात्मा दी सम्भाल कर

सकदियां ने ? तो विचार करन वाली गल है, जेडियां जीवात्मा अंतर दे विच जादियां ने, उन्हानूं पुछ करके देखो, पग - पग ते किस तरीके नाल ऐ नूरानी रूप जो है इसदी सम्भाल करदा है । किस तरीके दी भयानक रिछियां - सिछियां इसनूं घेर करके विचलाण दी कोशिश करदियां ने । कैसी भयानक फिसलन है उसदे ऊपर फिसलादियां ने और किस तरीके दे नाल सतिगुरु जो ने हर पल, हर घड़ी बचा करके पौढ़ी दर पौढ़ी चढ़ादे होये उस जगह लै करके जादे ने, जिस जगह ऐ कहा जांदा है नाम, शब्द यानि कि लफज कोई नाम नहीं है, कोई शब्द नहीं है । पूरे जगत दे विच असी देखदे हाँ, कोई अल्लाह कहंदा है, कोई वाहिगुरु कहंदा है, कोई राथा - स्वामी कहंदा है यानि कि जितनियां वी भाषा ने इस परमात्मा दे नाम रख लये । यानि कि नाम कोई ओ नाम नहीं है यानि लफज ओ नाम, शब्द, अकथं - कथा, कीर्तन नहीं है, ओ इक ऐसी चेतन सत्ता है, अंतर दे विच जिसनूं असी हक दी आवाज कहंदे हाँ यानि कि ओ परमात्मा यानि कि सच है, सच ही हक है, ओ आवाज यानि कि जोत स्वरूप है, ओदे अन्दर इक प्रकाश वी है यानि नाम और शब्द इक ऐसी चेतन धारा है, इक ऐसी चेतन सत्ता है जिसने इस जगत दे विच क्या ज़़़, क्या चेतन

सभ नूं आधार दिता होया है और जदों ऐ चेतन धारा निकल
जांदी है, उस वेले क्या जङ्ग, क्या चेतन दोनों ही विलय दी
तरफ चलिया जादिया हन और ज्यों - ज्यों ऐ आवाज सिमटदी
जांदी है, निश्चित सीमा तों जदों परे निकल जांदी है, उसनूं
महाप्रलय दी संज्ञा देंदे हां यानि कि ओ लफजां दे विच कैद
होंण वाली वस्तु नहीं है । इस करके जितने वी अस्त्री अर्थ कडदे
हां, ऐ अधूरे ने । कितनिया ही नस्ला आईया, कितनिया ही
कौमा आईया, उन्हानूं कितने ही लफजां दे नाल याद करदे
रहे, कितने ही आ करके चले गये, कितने ही कर रहे ने, इन्हाने
वी चले जाणा है । कितनिया ही होर नस्ला आण गीया, अलग
भाषा दे नाल, लफजां दे नाल उसनूं याद कीता जायेगा, उस
तों बाद उन्हाने वी चले जाणा है, पर विचार करन वाली गल
है, कि ऐ सृष्टि कद तों चल रही है कोई नहीं जाणदा ! इतना
समा हो गया, कोई इतनी लम्बी उम्र लै करके बैठा होयेगा ते
ओ ही दस सकदा है कि कदों तों सृष्टि चल रही है । ओदे
आदि और अंत नूं अस्त्री नहीं जाण सकदे, उसदी इक रोम दी
किरन तों अनगिनत ब्रह्मण्डा दी उत्पत्ति हो गई, इतनी
विशाल रचना रची गई और “घट - घट के अंतर की जानत”
यानि कि घट दे अन्दर सूक्ष्म तों सूक्ष्म तरंग वी उत्पन्न होंदी है,

ओ वी उसनूं खबर मिल जांदी है ऐसी भयानक सत्ता है । इक ऐसी भयानक चेतन सत्ता जेडी कि हर घट - घट विच रमी होई है, ओ किसी लफज दे विच किस तरह कैद हो सकदी है ? दो - चार लफजां नूं जप करके असी उस परमात्मा नूं कैद करन दी कोशिश कर रहे हाँ, इस तरीके दे नाल परमात्मा नहीं मिलदा ! “कहा भयो दोऊ लोचन मूँद के बैठि रहिओ बक थिआन लगाइओ । न्हात फिरिओ लोए सात समुंद्रन लोक गइओ परलोक गवाइओ ।” कलगीधर पातशाह ने आपणी बाणी दे विच इस चीज नूं इस भावना नूं बड़े अच्छे तरीके नाल स्पष्ट कीता है । बहुत पहले ही उन्हाने ऐ भाव नूं स्पष्ट कर दिता, क्योंकि उन्हानूं पता सी कि आण वाली नस्लां जेडियां ने लफजां दे गेड विच फँस जाण गीयां ! इक ऐसे कीचड़ विच, दलदल विच फँस जाण गीयां कि इक कीचड़ विच्चों निकलण गीयां, दूसरे विच फँस जाण गीयां, यानि कि पढ़न विच्चों निकले, ते सुणन विच फँस गये ! सुणन विच्चों निकले, ते विचारन विच फँस गये ! ओदर विचार विच्चों निकले, ते अमल असी अज तक नहीं कीता, अगर असी अमल कर लेया होंदा, ते असी कद दे पार उतर गये होंदे ! ऐ जींदे जी मरन दा मजमून है, इस करके गुरु साहबां ने स्पष्ट कीता

है, अन्दर दी अख ते तेरी बंद है और ऐ बगुले वाली अख तूं बंद करके बैठा हैं, इस अख दे बंद करन दे नाल तूं वैसे ही अन्ना (अंधा) हो जायेंगा, अन्दरों तूं अन्ना है ही हैं और किस तरीके दे नाल तूं करम कर रेहा हैं, ऐ सारे करम तेरे अंत विच साथ नहीं देंणगे ! और मन नूं समझादे ने ऐ मन मूँडमत आखिर तेरा किसी वी करम ने साथ नहीं देणा अगर तूं उस अकाल पुरुख दे चरनां दी शरण लै लवें, ते ताहीं तेरा उपकार हो सकदा है, ताहीं तूं उस परमात्मा नूं मिल सकदा हैं, आवागमन तों छुट सकदा हैं, उस तों बिना होर कोई चारा नहीं है । इस करके बार - बार उलाहना दे के मन नूं समझाया जांदा है, कि दस इन्द्रियां दी दासतां तों निकल करके परमात्मा दी शरण विच आ इस करके गुरु साहबां ने स्पष्ट कीता है, कि ऐ लफज कोई नाम नहीं है, नाम अंतर दी ओ चेतन सत्ता है जेडी कि पारब्रह्म दे विच जा करके मिलदी है । ओ उस तों पहले जेडी सत्ता मिलदी है ओ अधूरी रूप दे विच है और उन्हीं लोकां विच्चों जो अवतार इस जगत दे विच आये ने पहले मण्डल तों यानि छठे चक्र तों आज्ञा चक्र तों आये ने, जितनी वी ईश्वरीय ताकतां इस जगत दे विच आईयां ने, कोई निन्दया नहीं, कोई वडिआई नहीं, ऐ विचार करन दा मजमून है ! जद

तकण असी मत और धर्म दी दीवारा विच्छों, इन्हां दी कैद विच्छों, जिन्हां दे विच असी आपणे आप नूं कैटी बणा रखया है इन्हां दे विच्छों निकल करके खुले दिल और दिमाग दे नाल इस बाणी दे ऊपर विचार नहीं करागे, तद तकण असी उस सच नूं प्राप्त नहीं कर सकदे । जिन्हां दे विच असी सच नूं लभ रहे हां, ओना दे विच सच है ही नहीं, ओ सारीया दीया सारीया वस्तुआं नाशवान ने । कृष्ण जी ने कोई ऐसी गल नहीं छड़ी जेड़ी उजागर न कीती होये, उसदे बावजूद असी उन्हां दी मूर्ति बणा करके उन्हां दी अराधना करनी शुरू कर दिती, पर जेड़ा गूड़ा ज्ञान उन्हाने साड़ी जीवात्मा लई दिता सी, कि नाशवान कौण है ! नाशवान इस संसार दीया सारीया वस्तुआं ने, उन्हां नूं त्याग दो और जो अविनाशी है, ऐ आत्मा अविनाशी है इसदा दीदार करो ! इसदी पहचाण करो ! जिसने आत्मा नूं पहचाण लेया, आत्मा दी पहचाण तद ही होयेगी, जदों मन निश्चल होयेगा, मन दे विकार जो है उस तों निकलागे । जद तकण उसदे विच्छों निकलागे नहीं, तद तकण आत्मा दा दीदार नहीं हो सकदा और आत्मा परमात्मा दा अंश है, ओ वी जोत और प्रकाश स्वरूप है, इस करके दोनां दा आपस दे विच इक खिंचाव है । ओ ही शब्द, ओ ही नाम जेड़ा कि आत्मा नूं खिंच

करके उस जगह लै करके जांदा है जित्ये कि ओ अविनाशी
यानि कि अकाल पुरुख मौजूद है । इसी करके परमात्मा जो
है गुरु साहबां दे जरिये इस बाणी दे जरिये इस जगत दे विच
जो वी बाणी या उपदेश दे रही है, देंदे ने, उसदा की भाव है,
कि उस नाम नूं उस शब्द नूं उस सच नूं प्राप्त करो और ओ
सच्चा शब्द जेड़ा है ओ पारब्रह्म दे विच मिलदा है । हुण
विचार करके देखो, जड़ वस्तुआं दी अराधना करके असी किस
तरीके दे नाल सच्चे शब्द नूं प्राप्त कर सकदे हां ? अगर असी
सचमुच ओ सच्चे शब्द नूं उस परम चेतन नूं प्राप्त करना
चाहंदे हां, ते इस जीवात्मा नूं इन्द्रियां दी दासतां तों मुक्त
कराणा पयेगा । जद तकण ऐ 14 वस्तुआं निश्चल नहीं होंण
गीया, तद तकण असी चाह करके वी उस सच्चे परमात्मा नूं
प्राप्त नहीं कर सकदे और उसदा इको ही आधार है, कि उसदे
नाल असी प्रीत करिये । इस जड़ वस्तुआं दी आसक्ति नूं छड
के उसदे नाल प्रीत करके उसदे विच्चों कोई डर पैदा होंदा है,
ओ डर आपणे अन्दर उत्पन्न करिये और अगर असी भाग्यशाली
होये, कोई विरला ही है जेड़ा कि इस दात नूं प्राप्त करदा है !
ते उसदा ऐ भाव वी नहीं है, कि असी भाग्यशाली नहीं बण
सकदे । जेड़ा वी स्टूडेंट दाखिला लैंदा है, इसदा ऐ मतलब नहीं

है कि उसनूं डिग्री मिलन दा अधिकार नहीं है, ओ अधिकार उसनूं एडमिशन दे नाल ही मिल जांदा है, पर उसदे नाल ऐ वी उपदेश है कि उसने पूरा साल 365 दिन आपणे सतिगुरु दे उपदेशां अनुसार अमल करना है । जो वी उपदेश उसनूं दिते जादे ने, ओदा होमवर्क वी करना है और रात - दिन जाग करके उसनूं अमली जामा वी पहनाणा है । हुण जेझी जीवात्मा इस तरीके दा स्टूडेंट बणदी है, ओ सचमुच आपणे धुर दा करम बणा लैंदी है “धुर मस्तक लिखिआ लिलाट” ऐ उसी वक्त धुरों मस्तक ते लिखिआ जांदा है । जेझी जीवात्मा तङ्गफदी है उस परमात्मा नूं प्राप्त करन वास्ते, ओ परमात्मा कदी किसी रूप नूं नहीं देखदा, कि मैंनूं किस रूप दे विच याद कीता जा रेहा है, ओ भोलापन नूं देखदा है, अन्दर दे उस विकार नूं देखदा है, कि ऐ विकार नूं त्यागदा है कि नहीं ! हजरत मूसा सन, ओ इक वारी जंगल विच जा रहे सन । उन्हाने की देखया, कि गडरिया जो भेड़ां चरा रेहा सी, बकरियां चरा रेहा सी, बड़ी धुन दे आपणे भोलेपन दे विच ओ आपणे प्यार दे विच मस्त सी । उस परमात्मा दे नाल गल्ला कर रेहा है । की कह रेहा है, “कि ऐ परमात्मा अगर तू मैंनूं किसी वच्ये दे रूप दे विच मिल जायें, कि मैं तेरा किस तरीके दे नाल पालन करां ! मैं आपणी इक

भੈਡ ਦਾ ਦੁਥ ਚੌਵਾਂ, ਤੈਨ੍ਹੁਂ ਦੁਥ ਪਿਲਾਵਾਂ, ਤੈਰੇ ਕਪਡੇ ਸਾਫ਼ ਕਰਾਂ, ਤੈਨ੍ਹੁਂ
ਝੂਲੈ ਦੇ ਵਿਚ ਝੂਲਾ ਝੂਲਾਵਾਂ ਔਰ ਤੈਨ੍ਹੁਂ ਲੈ ਕਰਕੇ ਵਿਚਰਣ ਕਰਾਂ ਇਸ
ਜਗਤ ਦੇ ਵਿਚ” ਧਾਨਿ ਇਸ ਤਰੀਕੇ ਦੇ ਨਾਲ, ਜਿਸ ਤਰਹ ਇਕ ਪਿਤਾ,
ਇਕ ਮਾਂ ਆਪਣੇ ਬਚ੍ਚੇ ਦੇ ਨਾਲ ਗਲ ਕਰਦੀ ਹੈ, ਉਥੇ ਤਰੀਕੇ ਦੇ ਨਾਲ
ਮੋਲੇਪਨ ਦੇ ਵਿਚ । ਕਿਥੋਂ ? ਕਿਥੋਂਕਿ ਓਦੇ ਵਿਚ ਬੁਛਿ ਸਮਰ्थਾ ਨਹੀਂ
ਹੈ, ਕਿ ਓ ਪਰਮਾਤਮਾ, ਪਰਮ ਚੇਤਨ ਕਿਸ ਰੂਪ ਵਿਚ ਇਸ ਜਗਤ ਦੇ
ਵਿਚ ਵਾਪਟ ਹੈ, ਪਰ ਓ ਉਸਨ੍ਹੁੰ ਇਕ ਬਚ੍ਚੇ ਦੇ ਰੂਪ ਦੇ ਵਿਚ ਦੇਖ ਰੇਹਾ
ਹੈ ਔਰ ਬਚ੍ਚੇ ਦੇ ਨਾਲ ਇਸ ਤਰੀਕੇ ਦੇ ਨਾਲ ਗਲ ਕਰ ਰੇਹਾ ਹੈ,
ਪਰਮਾਤਮਾ ਸਮਝਾ ਕੇ ਉਸਦੇ ਨਾਲ ਗਲ ਕਰ ਰੇਹਾ ਹੈ । ਜਿਸ ਵੇਲੇ
ਹਜ਼ਰਤ ਮੂਸਾ ਨੇ ਉਸਨ੍ਹੁੰ ਇਸ ਤਰੀਕੇ ਦੇ ਨਾਲ ਗਲ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਦੇਖਿਆ,
ਤਾਂ ਉਸਨ੍ਹੁੰ ਬੱਡੇ ਜੋਰ ਦੀ ਫਟਕਾਰ ਲਗਾਈ, ਕਿ ਓ ਪਰਮਾਤਮਾ ਜੋ ਹੈ
ਇਸ ਤਰੀਕੇ ਦੇ ਨਾਲ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦਾ । ਓ ਮਨ ਔਰ ਬੁਛਿ ਦੀ ਸੀਮਾ
ਤੋਂ ਪਰੇ ਦੀ ਵਸਤੂ ਹੈ, ਅਗਰ ਅਸੀਂ ਉਸਨ੍ਹੁੰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ, ਤੇ
ਸਾਨ੍ਹੁੰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸੀਮਾ ਤੋਂ ਨਿਕਲ ਕਰਕੇ ਅੰਤਰ ਦੇ ਵਿਚ ਸ਼ੁਦ਼ੀ ਔਰ
ਨਿਰਮਲ ਆਤਮਾ ਦੇ ਜਾਇਧੇ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨਾ ਚਾਹਿਦਾ ਹੈ । ਇਸ ਕਰਕੇ ਤੂ
ਏ ਜੋ ਕਮ ਕਰ ਰੇਹਾ ਹੈਂ, ਏ ਗਲਤ ਹੈ ! ਔਰ ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਉਸਨੇ ਇਸ
ਤਰੀਕੇ ਦੀ ਗਲ ਹਜ਼ਰਤ ਮੂਸਾ ਤੋਂ ਸੁਣੀ, ਤੇ ਇਕ ਦਮ ਉਸਦੇ ਅੰਦਰ
ਚੇਤਨਤਾ ਆ ਗਈ, ਉਸਦੇ ਅੰਦਰ ਇਕ ਭਰ ਪੈਦਾ ਹੋ ਗਿਆ, ਕਿ ਮੈਂ
ਕੋਈ ਐਸਾ ਕਮ ਕਰ ਦਿਤਾ ਹੈ, ਐਸਾ ਭਯਾਨਕ ਕਮ ਕਰ ਦਿਤਾ ਹੈ

कि मैं परमात्मा तों विछुड़ गया वा' । यानि कि इस डर ने ओ पैदा कर दिता कि इन्द्रियां दी दासता तों मुक्त हो गया । उसी वक्त मन निश्चल हो गया, उस डर ने उसनूं इस मुकाम ते पहुँचा दिता, कि अन्दर आत्मा सिमट गई और उसनूं परमात्मा दा दीदार हो गया और उसी वक्त जंगल दी तरफ दौड़ गया । और उसी बेले आकाशवाणी होई, “ऐ हजरत मूसा, मैं तैनूं इस जगत दे विच किस वास्ते भैजया है ? तैनूं जौङ्गन वास्ते भैजया है, तैनूं तोङ्गन वास्ते नहीं भैजया ! तूं मेरे इक बदे नूं जो मेरे नाल जुङ्या होया सी बड़े प्यार दे नाल, तूं उसनूं तोङ्गन दी कोशिश कीती है । ते मेरा ऐ उपदेश नहीं सी ! मैं ऐ नहीं देखदा, तेरी विद्वता की है, तूं कितनी पढ़ाई कीती है, कितने काँलेजां तों छिंगी लई है, कितने लम्बे - लम्बे श्लोक पढ़ के तूं उन्हां दे अर्थ कड़दा हैं । इस तरीके दी गल नहीं है, मैं ते अन्दर दे विकार दी निर्मलता देखदा वां, कि उसने आपणे आप नूं निर्मल करन दी कोशिश कीती है कि नहीं ! मैं ओदा भोलापन देखदा वां कि ओ आपणे भोलापन दे विच, आपणे प्यार दे विच उस परमात्मा नूं चाहे ओ किसी वी रूप विच देख रेहा है, चाहे जड़ दे रूप विच देख रेहा है या चाहे किसी और रूप विच देख रेहा है, पर मैं उसनूं जरूर मिलदा वां । क्यों ? क्योंकि उसदे अन्दर ओ सारे विकार जेडे ने निकल चुके होंदे ने । इस करके मैं

तैनूं जो उपदेश दिता है, उस उपदेश दी पालना कर ।” उस वेले जिस वेले हजरत मूसा दुबारा उस गडरिये दे कोल गये ने, उसनूं जा करके आपणी गल्ती दी माफ़ी मंगी है, कि मैनूं माफ कर देई कि मैनूं परमात्मा ने दुबारा आ करके उपदेश दिता है कि तूं उस परमात्मा दे नाल मिलया सैं, तैनूं परमात्मा ने आपणे दरबार विच परवानगी दे दिती है, परवान कर लेया है । उस वेले गडरिये ने कहा, “हे हजरत, जिस वेले तूं मैनूं फटकार लगाई सी, मेरे अन्दर दा पर्दा उसी वेले खुल गया सी और जेड़ा तेरे कोल आया सी, ओ मेरे कोल वी आया है और मैं उस सच्चे अविनाशी नूं प्राप्त करके सदा लई आवागमन तौं मुक्त हो गया वां ।” साध - संगत जी, विचार करन वाली गल है इस साखी तौं, कि जद तकण अन्दर दे विच ऐ डर पैदा नहीं होयेगा, असी डर दे नाल आपणे अन्दर दी सफाई नहीं कर सकदे और जेड़ी जीवात्मा अंतर दे विच आपणी सफाई नहीं करेगी, तद तकण ओ सच्चे परमात्मा नूं प्राप्त नहीं कर सकदी । गुरु साहबां ने आपणी वाणी विच वी इसी गल नूं स्पष्ट कीता है । इन्द्रियां नूं निश्चल करना, ओदी दासतां तौं मन नूं मुक्त कराणा । गुरु साहबां ने आखिरी पौढ़ी विच इस दृष्टांत दे जरिये स्पष्ट कीता है इस भय दे उपदेश नूं, कि किस तरीके दे नाल असी परमात्मा

नूं प्यार करके उस दे विच्चों डर नूं पैदा करके आपणे अन्दर
दी सफाई कर सकदे हां । इक जो है सुनार है, सुनार दा
उदाहरण दिता है गुरु साहबां ने इस पौढ़ी दे विच सुनार दी
दुकान ते अगर असी जाईये, ओदी दुकान ते जा के असी की
देखदे हां सब तों पहला कम जेडा सानूं नजर आंदा है कि
उसदी दुकान दे विच बहुत ही कीमती वस्तु यानि कि सोने दे
आभूषण तैयार करदा है । सोना जो है इक कीमती धातु है,
इस जगत दे विच उसदी बहुत कीमत है । इस करके ओ की
करदा है, कि ओ आपणी दुकान यानि कि हट्टी जो है उसदी
सफाई रखदा है । सफाई दा की भाव है यानि मिट्टी दे कण
उसदे विच नहीं होंणे चाहिदे । अगर मिट्टी है, ते ओ सोने दी
कीमत घटेगी यानि कि सोने दे विच मिलावट आ जायेगी ।
इस करके ओ बार - बार की करदा है, हट्टी दी सफाई करदा
है । उसदे बाद असी की देखदे हां, इक भट्टी है, पाहारा यानि
भट्टी, भट्टी दा की भाव है, कि ओस दे विच सोने नूं तपांदा है
। तपाण दे बाद उसनूं घालदा है यानि कि असी की करना है
? गुरु साहबां ने इक परमार्थी नूं इसदे नाल दृष्टांत दे करके,
इसदी तुलना करके इसनूं उपदेश दिता है, कि अगर तूं जर्ती
होवें यानि कि आपणे आप नूं इन्द्रियां दी दासतां तों मुक्त

करावें विचार करके देख लो, ऐ मजमून इतना सस्ता और
आसान नहीं है कि आपणे सतिगुरु कोल गये जा करके उन्हानूं
धार आये और नाम लै लेया, अमृत छक लेया, ते साडी सम्भाल
हो गई ! इस तरीके दे नाल अगर सारेयां दी सम्भाल हो गई,
ते अज तक ऐ सृष्टि कद दी खाली हो गई होंदी, सारे सचखण्ड
पहुँच गये होंदे ! क्यों ? क्योंकि संत हर युग दे विच हमेशा
मौजूद हन और पिछले युगां दे विच ऐ नाम, ऐ शब्द किसी नूं
प्राप्त नहीं होया, ऐडियां रगड़दे - रगड़दे मर गये । शिवजी नूं
कदी ओ धुन प्राप्त नहीं होई ! अगर ओ धुन उन्हानूं प्राप्त हो
गई होंदी, ते क्या ओ ब्रह्म दे विच लीन हो गये होंदे ? ते क्या
ब्रह्म दे विच बैठे ओस परमात्मा दा ध्यान कर रहे होंदे ? ओ
वी विचार करके ध्यान करके देख लो, ओ वी इस जगत दे
विच सतिगुरु कोल आ करके ऐ ही फरियाद करदे ने, कि मैनूं
वी मनुखा जन्म देओ, कि मैं तुहानूं प्राप्त कर सकां ! कि अगर
असी शिव दा ध्यान कर रहे हां, ते शिव जी उस परमात्मा दा,
उस अकाल पुरुख दा ध्यान कर रहे ने । ते विचार करके देखो,
कि क्या उन्हां दी अराधना करके क्या असी पारब्रह्म चले
जावांगे ? इस तों ऐ ही स्पष्ट होंदा है, कि जद तकण ऐ
जीवात्मा इस मन दी दासता तों मुक्त नहीं होंदी यानि कि

इन्द्रियां दी दासता तों मुक्त होंणा । मन ने ही सानूं समझा रखया है कि तिनां गुणां दी अराधना करनी है । ऐ पूरा जगत जो है जितने पूरे अवतारा समेत ब्रह्म तक दी जेड़ी रचना है, तिनां गुणां दे अधीन है । ओ तिनां गुणां ने ही सारी गड्बड्ड इस जगत विच मचा करके रखी है और जद तकण असी इस गड्बड्ड तों नहीं निकलागे, तद तकण उस सच्चे परमात्मा नूं यानि कि चौथा गुण कित्थे है ? ओ सच्छण्ड विच है और अगर असी चौथा गुण नूं प्राप्त करना चाहंदे हां, अविनाशी होंणा चाहंदे हां, ते तिनां गुणां दी रचना तों निकलना पयेगा और जितनी वी ऐ ईश्वरीय ताकता जो अधूरियां ने यानि नकल दीयां वी नकल ने, इस जगत दे विच आईयां ने, उन्हाने ऐ ही उपदेश दिता है । आपणी पूजा करवाई है, आपणी अराधना करवाई है और रिद्धि - सिद्धियां दे जरिये इस जीवात्मा नूं ऐसे भयानक निचले और उचले करम करवाये ने । निचले दा भाव है कि 84 लख जामेयां दे विच जाणा । उच्चे दा भाव ऐ है, कि उत्तम भोगी जूनां स्वर्गा, बैकुण्ठां दे विच वासा करा करके लखां सालां दीयां लम्बियां उम्र दे करके इस जीवात्मा नूं मन दे जरिये ऐसा भ्रमा दिता, कि जीवात्मा कदे वी इस चौथे गुण नूं न प्राप्त कर सके, और जद तकण जीवात्मा ओ चौथे गुण

नूं प्राप्त नहीं करेगी, कदे वी इन्हां तिनां गुणां तों निकल करके अविनाशी नहीं हो सकदी यानि कि जन्म और मरण दे गेड़ तों नहीं निकल सकदी । ते गुरु साहबां ने ऐ तुक दे विच ऐ ही भाव स्पष्ट कीता है “जत पहारा” यानि कि जती होंणा है और ऐ भट्ठी केड़ी है ? ऐ अंतर दे विच आ करके भट्ठी होंदी है । ऐ किस तरीके दे नाल सुनार दा उदाहरण दे करके कि ओ सुनार की करदा है, कि ज्ञान दा हथौड़ा, इस जीवात्मा दी मत है, केड़ी मत है ? ऐ मन दी मत इसने लई होई है । ओ मन दी मत ऊपर जदों ज्ञान दा हथौड़ा, ज्ञान की है ? ओ ज्ञान जदों असी सतिगुरु दे कोल जादे हां, सतिगुरु ज्ञान देंदे ने, अंतर दा वी ज्ञान देंदे ने और बाहर दा ज्ञान वी देंदे ने । अंदर दा ज्ञान की है ? जिस वेले असी अंतर दे विच जीवात्मा सिमट्ठी है, ओ नूरानी रूप दे विच जो उपदेश देंदे ने, ऐ अन्दर दी क्रिया है । ओ बाहर दा ज्ञान केड़ा है ? जदों इस जगत दे विच सतिगुरु आंदे ने, देह दे विच आंदे ने । असी सतिगुरु नूं देह समझ करके बैठे हां, शरीर समझ करके बैठे हां, ऐ अधूरा मत है, मन दी मत है ! सतिगुरु कोई देह नहीं है, ते ओ देह क्यों लै करके आये ने ? क्योंकि इक इन्सान नूं इक इन्सान ही समझा सकदा है यानि कि इन्सान दा गुरु इन्सान ही हो

सकदा है और कोई वी जून लै लो जितनियां वी उचली या
निचली जूनां ने, देवी - देवता ने, असी उन्हांनूं देख नहीं सकदे,
उन्हां दी भाषा सानूं समझ नहीं आंदी । निचली जूनां जेडियां
ने सानूं समझा नहीं सकदियां, ते फिर इक इन्सान नूं कौण
समझायेगा ? कौण ऐसा ज्ञान देगा, कि असी इस अज्ञानता दे
अंधकार तों निकलागे ? यानि कि गुरु की है ? ओ इक प्रकाश
दा कुंज है, अन्तर दे विच प्रकाश । जदों ऐ जीवात्मा अंदर
जादियां ने, ओ उसदा दीदार कर ही लैंदियां ने, उन्हांनूं कुछ
समझाण दी लोङ नहीं ! पर जेडी जीवात्मा अन्दर नहीं जादियां,
ओ ते बाहर तों समझाणा बहुत जरूरी है, कि ऐ प्रकाश दे रूप
विच किस तरीके ने, अंधकार कदों दूर होंदा है, यानि अज्ञानता
दा अंधकार जेडा मन ने अवतारां दे जरिये इस जगत दे विच
फैलाया है, इस जीवात्मा नूं भ्रमा करके रखया है, ऐ कदों दूर
होयेगा ? जदों सतिगुरु इस जगत दे विच आ करके सत्संग
करदे ने या होर किसी वी रूप विच बैठ करके आपणी वाणी
उच्चारदे ने । ऐ वाणी कोई उन्हां दी आपणी नहीं होंदी, ऐ
लफज जेडे ने ऐ तरंगा दे रूप दे विच सचखण्ड तों प्रसारित
किते जादे ने । सिर्फ सतिगुरु जो ने इक instrument दा
कम करदे ने । ओ instrument ऐसा होंदा है कि ओ

ਖ਼ਾਣਦਾ ਤੋਂ ਜੇਡਿਆਂ ਕਿਰਨਾਂ ਮਿਲਦਿਆਂ ਨੇ, ਓ ਉਨਹਾਂ ਦੇ
ਮੁਖਾਰਬਿੰਦ ਵਿਚ੍ਛਾਂ ਨਿਕਲ ਕਰਕੇ ਲਫਜ ਬਣ ਕਰਕੇ ਸਾਡੇ ਕਨਾਂ
ਨਾਲ ਟਕਰਾਦਿਆਂ ਨੇ । ਇਸੀ ਕਰਕੇ ਬਾਹਰ ਦੇ ਜਿਤਨੇ ਵੀ ਲਫਜ ਨੇ
ਸਾਡੇ ਕਨਾਂ ਨਾਲ ਟਕਰਾਦੇ ਨੇ, ਇਨ੍ਹਾਂਨੂੰ ਨਾਮ ਦੀ ਸੜਾ ਦਿਤੀ ਜਾਂਦੀ
ਹੈ । ਕੋਈ ਇਕ, ਦੋ, ਚਾਰ ਲਫਜਾਂ ਨੂੰ ਅਖੀ ਨਾਮ ਕਹਿਏ, ਏ ਅਧੂਰੀ
ਮਤ ਹੈ, ਮਨ ਦੀ ਮਤ ਹੈ ! ਇਸਦਾ ਜਾਪ ਕਿਥੀ ਹੈ ? ਜਦੋਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਲਫਜਾਂ
ਦੇ ਊਪਰ ਜੋ ਨਿਰੰਦੇਸ਼ ਲਿਖਿਆ ਹੈ, ਹੁਕਮ ਕਿਤਾ ਗਿਆ ਹੈ, ਏ ਜੀਵਾਤਮਾ
ਜਦੋਂ ਇਸ ਨਿਰੰਦੇਸ਼ ਦਾ ਪਾਲਨ ਕਰਦੀ ਹੈ, ਇਸਨੂੰ ਅਮਲੀ ਜਾਮਾ
ਪਹਨਾਂਦੀ ਹੈ, ਓ ਜੀ ਹੈ ਬਾਹਰ ਦੇ ਨਾਮ ਦਾ ਜਾਪ ਹੈ ਔਰ ਜਦ ਤਕਣ
ਏਦਾ ਜਾਪ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀ, ਓ ਜਤੀ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦਾ ਯਾਨਿ ਕਿ ਜਤੀ
ਹੋਣ ਲਈ ਗੁਰੂ ਦੇ ਉਪਦੇਸ਼ ਊਪਰ ਅਮਲ ਕਰਨਾ ਬਹੁਤ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ ਔਰ
ਗੁਰੂ ਦੇ ਉਪਦੇਸ਼ ਊਪਰ ਅਮਲ ਅਖੀ ਤਾਂਹੀ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਾਂ, ਬਚਾ
ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਦਾ ਕਹਣਾ ਓਦੋਂ ਹੀ ਮਨਦਾ ਹੈ, ਜਦੋਂ ਓ ਆਪਣੇ
ਪਿਤਾ ਨੂੰ ਓ ਪਾਰ ਕਰਦਾ ਹੈ, ਅਗਰ ਉਸਦਾ ਪਿਤਾ ਦੇ ਨਾਲ ਪਾਰ ਨ
ਹੋਵੇ, ਤੇ ਓ ਪਿਤਾ ਦੇ ਉਪਦੇਸ਼ ਦਾ ਓ ਪਾਲਨ ਵੀ ਕਦੇ ਨਹੀਂ ਕਰ
ਸਕਦਾ । ਅਗਰ ਓ ਕਰੇਗਾ ਵੀ, ਤੇ ਅਧੂਰੇਪਨ ਵਿਚ ਕਰੇਗਾ ਯਾਨਿ
ਕਿ ਪਿਤਾ ਦੀ ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਨਾ ਪ੍ਰਾਪਨ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ ਔਰ ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ
ਉਘਮ ਦੀ ਗਲ ਕਿਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ “ਉਘਮ ਕਰੇ ਪਲਕੇ ਪਰਭਾਤੀ ਇਖਾਨਾਨ
ਕਰੇ ਅਮ੃ਤਸਰ ਨਾਵੈ” ਯਾਨਿ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬਾਂ ਨੇ ਗੁਰੂਸਿਖ ਨੂੰ ਜੋ

उपदेश दिता है, ओ की दिता है ? कि अर्थी राती उठ करके परमात्मा दे नाल जुड़ना है । हुण विचार करके देखो, अर्थी राती कैसा काल दा सख्त पहरा होंदा है, कैसे झूटे आंदे ने नींद दे, ऐ जीवात्मा उठ नहीं सकदी । अगर उसदा परमात्मा दे नाल प्यार होयेगा, उसदे नाल मिलना चाहंदी होयेगी, ते जरूरी गल है, ऐ लड़ाई लड़ेगी यानि कि उद्यम करेगी ! अगर उद्यम करेगी, ऐदा मतलब है ओदे विच प्यार है । हुण जेड़ा अर्थी रात उठ करके उद्यम कर रेहा है, ते फिर ओ जींदे जी जगत दे विच भैड़ा कम क्यों करेगा ? किसी दा गला क्यों कटेगा ? झूठ क्यों बोलेगा ? क्यों ? क्योंकि ओदे अन्दर प्रीत दे नाल डर वी पैदा हो जायेगा । कि ओ इस चीज तों डरेगा, कि अर्थी राती दी मेरी मैहनत जेड़ी है परमात्मा नूं मिलन दी, उस तों मैं दूर न हो जावा, ओ मेरे तों खोई न जावे ! ऐ इक ऐसा डर हो जायेगा जो कि उसदे अंदर दी सफाई कर देगा । गुरु साहबां ने इसी चीज नूं स्पष्ट कीता है कि उद्यम करना वी जरूरी है, पुरुषार्थ करना जरूरी है, अगर पुरुषार्थ नहीं करागे, ऐ जन्म, ऐ जन्म सानूं क्यों दिता गया है ? पुरुषार्थ करन वास्ते दिता गया पुरुषार्थ दा की भाव है ? इस परमात्मा नूं मिलण लई ऐसे करम करने, कि असी इन्द्रियां दी दासतां तों मुक्त हो सकिये,

आपणे मन नूं निश्चल कर सकिये और जद तकण असी इस तरीके दी क्रिया नहीं करागे, उद्यम नहीं करागे, परमात्मा दी प्रसन्नता नूं हासिल नहीं कर सकदे यानि कि उद्यम करना वी जरूरी है और प्रसन्नता नूं हासिल करना वी जरूरी है । अगर उद्यम करन वाला ऐ कवे (कहे) यानि कि युगां दे युग अख बंद करके ऐ लफजां नूं जाप करदा रवे (रहे) और ऐ समझ के बैठे कि मैंनूं परमात्मा मिल जायेगा, ते ओ न कदी वी मिलया है, न कदी मिलेगा । जप ते सिर्फ इक अंग है इक चिंह रख के सफाई कराण दा, अगर उसने अंतर दे विच प्रीत पैदा कर लई, अंतर दे विच सफाई पैदा कर लई, ते विचार करके देख लो, दो - ढाई घटे नहीं इक क्षण दा जो जप है, उस परमात्मा दा दीदार करा देंदा है और अगर अंतर दे विच प्यार नहीं है, अंतर दी सफाई नहीं है, ते फिर जुगां - जुग लगे रहो, कदे वी उस परमात्मा दी जो है प्राप्ति नहीं हो सकदी । जो सुनार दी दुकान है ओत्ये जा करके सब तों पहलां ऐ ही चीज नजर आंदी है कि ओ आपणी दुकान दी बड़ी सफाई रखदा है । सफाई दा की भाव है ? ऐ जो तन और मन दी जो दुकान है इसदे विच्चों असी सफाई करनी है । इसे तरीके दे नाल कोई वी धूल दा कण, कोई वी विशे विकार दा कण, कोई

वी अंश इसदे अन्दर मौजूद न होये, अगर इसदे अन्दर अंश मौजूद होयेगा, ते ओदे विच मिलावट आ जायेगी यानि कि जेडा गहणा असी घालणा घालदे हां यानि ओ सच्चा शब्द, ओ निर्मल है, परम चेतन है, उसदे विच मिलावट आ जायेगी और अगर उसदे विच मिलावट आ जायेगी और ओ हौमे दी मैल है। रुकावट की है ? हौमे है, अगर अंतर दे विच हौमे होयेगी ऐ मैल होयेगी, ते असी उस सच्चे शब्द नूं टाल नहीं सकदे यानि कि ऐ जो टकसाल सच्ची है होंणी चाहिदी है, ऐ झूठी हो जायेगी। जद तकण ऐ झूठी टकसाल सच्ची नहीं होंदी, ओ सच्चा शब्द नहीं घड़या जा सकदा और जद तकण ओ सच्चा शब्द नहीं घड़या जायेगा, कि विचार करन वाली गल है, कि सानूं परमात्मा दी आसक्ति पैदा करनी पयेगी और परमात्मा दी आसक्ति ताहीं पैदा होयेगी, जदों असी प्रैक्टिकल तौर ते उद्यम कराएं।

साध - संगत जी, अज दे इस रुहानी सत्संग विच गुरु साहबां ने सचखण्ड तों जेडी बाणी दिती है, ओदे विच ऐ भाव बिल्कुल स्पष्ट कीता है, ऐ जीवात्मा जद तकण ऐ संसार विच, इस जगत विच आसक्त है, तद तकण ओ परमात्मा दी आसक्ति नहीं कर सकदी और जद तकण ऐ परमात्मा दी

आसक्ति नहीं करेगी, इसदे अन्दर भय उत्पन्न नहीं होयेगा । जद तकण इसदे अंतर दे विच भय उत्पन्न नहीं होयेगा, तद तकण ऐ अन्दर दी सफाई नहीं कर सकदी और जद तकण अन्दर दी सफाई नहीं होयेगी, तद तकण उस सच्चे शब्द नूँ उस सच्चे नाम नूँ जेड़ा कि पारब्रह्म दे विच मिलदा है कदे वी प्राप्त करन दी अधिकारी नहीं हो सकदी । इस करके जितने वी भ्रम ने, ऐ अधूरे अर्थ असी बाणी दे कडदे हाँ, इन्हाँ अधूरे अर्थाँ विच्चों निकल करके सानूँ ओ सच्चे अर्थ नूँ प्राप्त करना चाहिदा है । सत्संग दे विच अगर असी आंदे हाँ, सच्चे अर्थ नूँ प्राप्त करदे हाँ, ते साडा लाभ ताही है, उद्धार ताही है, जिस वेले असी इसदे ऊपर अमली जामा पहनाईऐ । मत कोई जाणे, अगर असी सत्संग दे विच आ गये, सतिगुरु दे दीदार कर लये या उस तों बाद उन्हाँ दी बाणी सुण लई, ते साडा उद्धार हो जायेगा ! कदी वी नहीं ! उद्धार तद ही होयेगा, जदों असी इसनूँ अमला जामा पहनावागे । इस करके साडा वी फर्ज बणदा है कि जेड़ी वी बाणी सतिगुरु सचखण्ड तों देंदे ने, ऐ बड़ी किमती और गहरी बाणी है, बड़े गूँडे अर्थ लै करके आंदी है और साडा फर्ज बणदा है, असी इन्हाँ अर्थाँ नूँ अन्दर धारिये, इन्हाँ दे ऊपर विचार करिये और उस तों बाद अमली जामा पहनाईऐ ! ताही

जा करके ऐ मनुखा जन्म जो है सार्थक हो सकदा है । जिन्हाने अमली जामा पहना लेया, उन्हाने मनुखे जन्म नूं सार्थक कर लेया और जेड़े भ्रम दे विच रहे, मनमत विच रहे, ओ पाप दी गठरी जेड़ी है बंध करके नाल लै गये यानि कि आवागमन विच रहे । जेड़े गुरमुख बण गये, उन्हानूं सच्चे नाम नूं सच्चे नाम सतिगुरु दे उस नूरानी रूप नूं सच्चे शब्द रूप नूं प्राप्त करके, गुरु साहब आंदे किस वास्ते ने ? इस जगत दे विच आंदे इस वास्ते ने कि ओ इक ऐसी सत्ता दे नाल मिलाणा चाहंदे ने, जिसनूं मिल करके ऐ जीवात्मा दा जन्म - मरण सदा खत्म हो जांदा है । असी इस जगत दे विच आ करके जितनिया जड़ वस्तुआं दी अराधना करदे हां या होर जितने वी तरीकेया दा इस्तेमाल करदे हां, जद तकण इस जीवात्मा नूं सोझी नहीं ओ इक अलग मजमून है । जदों असी इस सोझी नूं प्राप्त कर लेया, इस उपदेश नूं सुण लेया, उस तों बाद साडा फर्ज हो जांदा है कि असी वी उस चेतन वस्तु नूं प्राप्त करन वास्ते जो विधि जो तरीका सानूं सतिगुरु देंदे ने, उसनूं अमली जामा पहनाईए । अगर असी अमली जामा नहीं पहनावागे, ते असी मनमत विच रवागे (रहागे) और मनमत जेड़ी है सानूं ४५ दे गेड़ विच भ्रमायेगी । इस करके साध - संगत जी, साडे

सरियां दा फर्ज बणदा है कि असी इस बाणी नूं अमली जामा
पहना करके इस जीवात्मा दा उद्धार करिये, इसी उद्धार वास्ते
ही असी ऐत्थे इकट्ठे होंदे हां। सचखण्ड तों जेडी बाणी मिलदी
है, गुरु साहब कई तरीके दे घष्टांत देंदे ने, होर कई तरीके दे
लफजां दा इस्तेमाल करदे ने, उन्हां दा की भाव है, सिर्फ जो
अंग लैंदे ने, उसनूं अच्छे तरीके नाल सिर्फ सानूं समझा सकण
। इसदे इलावा उन्हां दा कोई वी भाव नहीं होंदा और न किसे
दी वडिआई और न किसे दी निन्दया। कोई वी माई - भाई
अगे वद के इसदा कोई होर अर्थ कडदा है, ते ऐ उसदी आपणी
मनमत है, गुरमत दा इसदे नाल कोई वी संबंध नहीं। शब्द
गुरु ते दास दी सारी साथ - संगत नूं प्यार भरी सलाम ।